हिंदी भक्ति काव्यधारा
में
हरियाणा का योगदान

स्नातकोत्तर हिंदी विभाग

बनवारी लाल जिंदल सूईवाला महाविद्यालय

तोशाम (भिवानी)

(चौधरी बंसीलाल विश्वविद्यालय, भिवानी से सम्बद्ध)

Hkfedk

बनवारी लाल जिन्दल सूईवाला महाविद्यालय, तोशाम के स्नातकोत्तर विभाग हिन्दी द्वारा एक दिवसीय राष्ट्रीय संगोष्ठी 'हिन्दी भक्ति काव्यधारा में हरियाणा का योगदान' विषय पर निदेशक उच्चतर शिक्षा विभाग हरियाणा के तत्त्वावधान में आयोजन किया गया। संगोष्ठी में देश के विभिन्न प्रान्तों से शिक्षाविद्, विषय विशेषज्ञ एवं शोधार्थियों ने भाग लिया। संगोष्ठी के उद्घाटन सत्र तकनीकी सत्र प्रथम, द्वितीय एवं समापन सत्र में हरियाणवी संत साहित्य का समाज में योगदान, उनकी उपादेयता और प्रासंगिकता आदि विषयों पर गंभीर विमर्श हुए।

सुकरात ने एक बार कहा था कि जब ईश्वर को धरती के जीवों व मनुष्यों से वार्तालाप करना होता है तो वह कवियों की वाणी व संतों के मुख माध्यम से बोलता है। वह अपना दिव्य संदेश कवित मुख व वाणी से देता है। सुकरात का यह कथन हरियाणवी संतों व कवियों पर लागू होता है। संत वह होता है जो सत्य के बल पर आत्मोन्नति करता हुआ ईश्वर मिलन की साधन करता है, लोक मंगल की साधना करता है और लोक मंगल की कामना भी करता है।

हरियाणवी भक्तिकालीन कवियों एवं संतों ने भक्ति साधना के साथ तत्कालीन समाज, धर्म व राजनीति के विविध संदर्भों को उठाकर अत्यन्त ओजस्वी वाणी में अपना साहित्य रचा। उनका साहित्य धार्मिक–सामाजिक चेतना से अनुप्राणित रहा। लोक साहित्य लोकगीत, लघुकथा, नाट्य साहित्य आदि साहित्यिक क्षेत्र में हिन्दी साहित्य की शोभा बढ़ाई। लेकिन हरियाणवी साहित्य की यह ज्ञान मंजूसा काल के क्रूर–हाथों बिखर सी गयी। इस संगोष्ठी के आयोजन का मुख उद्देश्य हरियाणवी साहित्य की उपादेयता को सिद्ध करना है। शिक्षाविद्ों एवं विषय विशेषज्ञों के विचारों को सभागार तक सीमित न रख कर हमने उनके विचारों को पुस्तक में मुद्रित करवाया। ताकि पाठक व समाज के अन्य वर्ग हरियाणवी कवियों की महत्त्वता के बारे में जाने, जो हिन्दी साहित्य का केन्द्र बिन्दु है।

इस सफल आयोजन के लिए निदेशक उच्चतर शिक्षा विभाग हरियाणा, विभिन्न प्रांतों से आए शिक्षाविदों, विषय–विशेषज्ञों, शोधार्थियों, महाविद्यालय प्रशासन एवं आयोजन समिति के मेरे साथी सभी स्टाफ सदस्यों का मैं तहदिल से आभार व्यक्त करता हूँ।

हार्दिक शुभकामनाएँ।

आयोजन सचिव
Mk- egUn flag
अध्यक्ष हिन्दी विभाग
बनवारी लाल जिन्दल महाविद्यालय, तोशाम (भिवानी)

jk"Vªh; ijke'kZ eaMy

1.	डॉ. प्रकाश चिकुर्डेकर	प्रोफसर, शोध निर्देशक यशवंतराव चव्हाण वारणा महाविद्यालय, वारणानगर–कोल्हापुर, महाराष्ट्र
2.	प्रो. मन्जुनाथ एन. अंबिग	अध्यक्ष हिन्दी विभाग उच्च शिक्षा और शोध संस्थान, दक्षिण भारत हिन्दी प्रचार सभी ऐरणाकुलम (केरल)
3.	डॉ. एन. सेलवाराज	अध्यक्ष हिन्दी विभाग डॉ. जी.आर. दामोदरम कॉलेज ऑफ साईंस कॉयम्बटूर, तमिलनाडू
4.	डॉ. राजेन्द्र कुमार बड़गुज्जर	अध्यक्ष, शोध निर्देशक हिन्दी विभाग केन्द्रीय विश्वविद्यालय, मोतीहारी चंपारण (बिहार)
5.	डॉ. जयकौशल	सह प्रोफेसर केन्द्रीय विश्वविद्यालय, त्रिपुरा
6.	डॉ. मधुकांत	प्रसिद्ध साहित्यकार, रोहतक
7.	प्रो. सजिता. जे	श्री रामकृष्णा कॉलेज ऑफ आर्ट एण्ड साईंस कोयम्बटूर (तमिलनाडू)

lykgdkj eaMy

1.	श्री यशपाल महता	विभागाध्यक्ष अर्थशास्त्र, बी.एल.जे.एस. कॉलेज, तोशाम
2.	श्री श्याम वशिष्ठा	वाणिज्य विभाग, बी.एल.जे.एस. कॉलेज, तोशाम
3.	डॉ. जोगेन्द्र कुमार	विभागाध्यक्ष संस्कृत, बी.एल.जे.एस. कॉलेज, तोशाम
4.	डॉ. सोमेन्द्र शर्मा	विभागाध्यक्ष अंग्रेजी, बी.एल.जे.एस. कॉलेज, तोशाम

lns'k

प्राचीनकाल से भारतभूमि धर्म, दर्शन और संस्कृति की उद्‌भावक पावन धरा रही है। इन सबका समन्वय साहित्य में विद्यमान है। साहित्य में जो हित का भाव है, वह उसमें विद्यमान धर्म, दर्शन और संस्कृति का सारतत्त्व ही तो है। हरियाणा धर्म, दर्शन और संस्कृति के मानबिन्दुओं को प्रखरता से रेखांकित करने वाली भूमि है। यहाँ सरस्वती के तट पर बने आश्रमों में जो चिन्तन मनन हुआ, वह हरियाणा के लिए गौरव का विषय है। इस प्रदेश में स्मृति–ग्रंथों की रचना विश्व साहित्य की अनमोल निधि है। इसी भूमि में ही ज्ञान–कर्म के संस्कार विद्यमान रहे हैं, जिनकी अभिव्यक्ति विगत हजारों वर्षों के साहित्य में देखने को मिलती है। यहाँ के ऋषियों, मुनियों, संतों, भक्तों, गुरुओं और साहित्यकारों ने एक ओर भक्ति–दर्शन को नये आयाम दिए हैं, तो दूसरी ओर लोक साहित्यकारों ने अपने साहित्य के माध्यम से लोकरक्षक के साथ लोकरंजक के विविध रंग बिखेरे हैं। हरियाणा के भक्तिकाव्य में भक्ति को प्रभुभक्ति के अतिरिक्त राष्ट्रभक्ति और कर्मभक्ति जैसी अनेक भाव भंगिमाओं से भी अभिभूत किया है। यह भक्तिकाव्य परिस्थिति, देश, काल सापेक्ष काव्य है। इसलिए भक्ति के विविध रूप देखने को मिलते हैं। इन सभी भक्ति भावों से जिस राष्ट्रभाव की ऊष्मा प्रकट हुई, भारत के स्वाधीनता आन्दोलन के उन्मेष एवं विस्तार में भी उसकी महत्ती भूमिका रही है।

मैं विश्वविद्यालय परिवार की ओर से हिन्दी भक्ति काव्यधारा में हरियाणा का योगदान राष्ट्रीय सेमिनार के इस पावन अवसर पर कार्यक्रम के अनुष्ठान बन जाने की सद्‌भावना अर्पित करने को अपना सौभाग्य मानता हूँ और आयोजकों को शुभकामनाएं देता हूँ।

उपकुलपति
vkj- d- feRry
चौधरी बंसीलाल यूनिवर्सिटी, भिवानी

lns'k

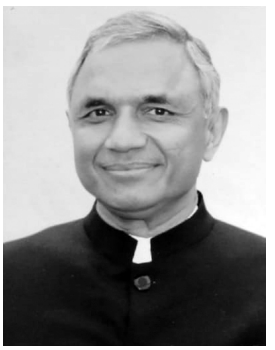

अपनी स्थापना से अब तक की अवधि में ही हमारे आपके महाविद्यालय ने सफलता के उच्चतम शिखरों को छुआ है तथा हरियाणा प्रान्त के अग्रणी महाविद्यालयों की श्रेणी में अपना स्थाना बना लिया है। शिक्षा, खेल–कूद सांस्कृतिक क्षेत्र व अन्य गतिविधियों में हमारे महाविद्यालय ने राज्य ही नहीं अपितु राष्ट्रीय स्तर पर अपनी सफलताओं का परचम लहराया है। मुझे यह जानकर अत्यंत प्रसन्नता हुई कि उपलब्धियों के सोपानों में एक और कड़ी हिन्दी विभाग द्वारा आयोजित, निदेशक उच्च्तर शिक्षा विभाग हरियाणा के तत्त्वावधान में एक दिवसीय राष्ट्रीय संगोष्ठी 'हिन्दी भक्ति काव्य धारा में हरियाणा का योगदान' विषय पर आयोजन के रूप में जुड़ने जा रही है। संगोष्ठी के लिए चुना विषय बहुत ही दिलचस्प है। यह वास्तव में हमारे महाविद्यालय के लिए बहुत गर्व की बात है।

मैं बी.एल.जे.एस. परिवार की ओर से प्राचार्य व आयोजक डॉ. राकेश कुमार भारद्वाज, संस्था निदेशक डॉ. ओमदत्त शर्मा, श्री देवेन्द्र देव शर्मा अधिवक्ता माननीय ट्रस्टी, आयोजन सचिव डॉ. महेन्द्र सिंह और उनकी टीम को इस राष्ट्रीय संगोष्ठी के आकार में महान पहल के लिए बधाई देता हूँ। इस कार्यक्रम के लिए आर्थिक सहायता एवं सहयोग प्रदान करने के लिए माननीय निदेशक, जनरल उच्चतर शिक्षा विभाग हरियाणा के लिए मेरा ईमानदारी से धन्यवाद।

मैं प्रत्येक प्रसिद्ध शिक्षाविद्, प्रतिनिधि, प्रतिभागी, स्टाफ सदस्य और विद्यार्थियों का भी आभारी हूँ जो इस संगोष्ठी की सफलता के लिए काम करेंगे।

शुभकामनाओं सहित।

मुख्य संरक्षक
Jh ,l- d- ftUny
संस्थापक ट्रस्टी

lns'k

बनवारी लाल जिन्दल महाविद्यालय तोशाम स्वास्थ परम्परा का निर्वाहण करते हुए महाविद्यालय के स्नातकोत्तर हिन्दी विभाग ने उच्चतर शिक्षा विभाग हरियाणा के सौजन्य से 19 फरवरी 2020 को एक दिवसीय राष्ट्रीय संगोष्ठी का आयोजन करना निश्चित किया है। जिसके लिए महाविद्यालय के प्राचार्य डॉ. राकेश कुमार भारद्वाज, निदेशक डॉ. ओमदत्त शर्मा जी, संगोष्ठी के आयोजन सचिव डॉ. महेन्द्र सिंह एवं आयोजन समिति के सभी सदस्य बधाई के पात्र हैं।

महाविद्यालय अपनी स्थापना के 25 वर्ष पूरे कर रहा है, और इस प्रकार के शैक्षणिक कार्यक्रमों से गुणात्मक शिक्षा प्रदान करने का महाविद्यालय का लक्ष्य भी प्राप्त होता है। इस राष्ट्रीय संगोष्ठी में देश के विभिन्न राज्यों के विषय विशेषज्ञ एवं विद्यार्थी अपने शोध–पत्र और विचारों के साथ उपस्थित होंगे जिससे उच्चतर शिक्षा की सार्थकता और गुणात्मकता के लिए भविष्य की योजनाएं बनाने में भी सहायता मिलती है। मैं समस्त आयोजकों, विषय–विशेषज्ञों एवं प्रतिभागियों को इस राष्ट्रीय संगोष्ठी प्रायोजन के लिए बधाई एवं शुभकामनाएं प्रदान करता हूँ।

Jh noUn no 'kek
अधिवक्ता एवं ट्रस्टी

lUns'k

अति हर्ष का विषय है कि बनवारी लाल जिंदल सूईवाला महाविद्यालय का स्नातकोत्तर हिन्दी विभाग ''हिन्दी भक्तिकाव्यधारा में हरियाणा का योगदान'' विषय पर एक दिवसीय राष्ट्रीय संगोष्ठी का आयोजन करने जा रहा है। मैं संगोष्ठी आयोजन सचिव एवं आयोजन समति के सदस्यों को इस महान् पहल के लिए बधाई देता हूं। इस संगोष्ठी से हिन्दी साहित्य से जुड़े अनेक विद्वानों को परस्पर विचार–विमर्श करने का अवसर तो अवश्य मिलेगा ही इसके साथ–साथ एक दूसरे के शोध कार्य में आने वाली समस्याओं का निवारण एवं साहित्य को अभिवृद्धि प्राप्त होगी। मुझे गर्व है अपने स्नातकोत्तर हिन्दी विभाग के शिक्षकों पर जिन्होंने इस महत्वपूर्ण आयोजन को करने की जिम्मेदारी उठाई। मैं हृदय की गहराई से शिक्षाविदों, शोधार्थियों, विद्यार्थियों जिन्होंने अपने शोध पत्र पुस्तक में मुद्रित कर साहित्य की श्रीवृद्धि एवं प्रत्यक्ष व अप्रत्यक्ष रूप से इस संगोष्ठी को सफल बनाने में सहयोग किया, उन्हें बधाई एवं शुभकामनाएं प्रेषित करता हूँ।

प्राचार्य

Mk- jkds'k dqekj Hkkj}kt

बनवारी लाल जिन्दल सूईवाला महाविद्यालय, तोशाम

lans'k

तोशाम ग्रामीण क्षेत्र में गुणात्मक शिक्षा का संचार करते हुए बनवारी लाल जिंदल सूईवाला महाविद्यालय को 25 वर्ष पूरे हो रहे हैं। महाविद्यालय ने इन 25 वर्षों में प्रत्येक क्षेत्र में राज्य एवं राष्ट्रीय स्तर पर बुलंदियों को छूआ है। यह बड़ा हर्ष का विषय है कि महाविद्यालय का स्नातकोत्तर हिन्दी विभाग एक दिवसीय राष्ट्रीय संगोष्ठी ''हिन्दी भक्ति काव्यधारा में हरियाणा का योगदान'' निदेशक, उच्चतर शिक्षा विभाग हरियाणा के तत्त्वावधान में आयोजन कर रहा है। मैं महाविद्यालय प्राचार्य डॉ. राकेश कुमार भारद्वाज, आयोजन सचिव डॉ. महेन्द्र सिंह, आयोजन समिति के सभी सदस्यों, शिक्षाविद, शोधार्थी, विद्यार्थी एवं प्रतिभागियों को बधाई एवं शुभकामनाएं प्रेषित करता हूँ।

परामर्शदाता
Mk- vkenÙk 'kek
निदेशक
बी.एल.जे.एस. महाविद्यालय, तोशाम (भिवानी)

ln'k

हिंदी साहित्य के इतिहास में मध्यकाल को स्वर्ण युग भी कहा जाता है। बेशक सुविधा की लिहाज से इसे संत और सूफी काव्य और राम व कृष्ण काव्यधारा में बांटा गया हो मगर इस पूरे काल के दौरान ईश्वर के साकार और निराकार दोनों रूपों को मानने वाले और इन्हें ही आधार बनाकर रचना करने वाले संत–सूफी कवियों ने श्रेष्ठ साहित्य रचा। चारों धाराओं के प्रमुख कवियों–कबीर, तुलसी, सूरदास और जायसी का अनुसरण करने वालों की लंबी परम्परा है। इन संतों–सूफियों ने सामाजिक रूढ़ियों, धार्मिक अंधविश्वासों पर अपनी कविताओं के माध्यम से करारी चोट की। लोकमंगल की भावना को सर्वोपरि मानकर इन संतों ने अपनी रचनाओं के जरिये कुछ सीख भी दी। हरियाणा के कई संत और सूफी कवि भी इस पंक्ति में अग्रणी रहे। कृष्ण भक्त सूरदास, संत गरीबदास, संत नितानंद, संत निश्चल दास, जैताराम, हरिदास और बाद में लोक कवि लख्मीचंद, राजाराम शास्त्री, हाली पानीपती, अहमद बख्श थानेसरी, अली बख्श, भाई संतोख सिंह जैसे कवियों की एक लंबी–चौड़ी परम्परा रही है, जिसका संबंध हरियाणा की माटी से रहा है। इन भक्त कवियों के योगदान को रेखांकित करने और उसकी उपादेयता को समझने–समझाने का प्रयास निःसंदेह एक सराहनीय कदम है। हिंदी की मुख्य धारा के साहित्य को हरियाणा की छोटी–छोटी सरणियों ने अवश्य इसे एक नई ऊंचाई प्रदान की है, जिस पर विद्वान लोग राष्ट्रीय संगोष्ठी में मिल–बैठकर विचार–मंथन करेंगे। तोशाम (भिवानी) के बनवारी लाल जिंदल सूईवाला महाविद्यालय में हो रही इस राष्ट्रीय स्तर की संगोष्ठी में अवश्य ही कुछ सार्थक नतीजे आयेंगे और भक्तिकाल की उपादेयता और प्रासंगिकता जैसे गंभीर प्रश्नों के उत्तर मिलेंगे। शुभकामनाएं।

M,- tkfxaæ flg
दैनिक ट्रिब्यून
चंडीगढ़

lEikndh; vLohdj.k

प्रतिनिधियों द्वारा भेजे गए शोध–पत्र की किसी भी प्रमाणिकता और शुद्धता के लिए संपादक और कॉलेज प्रशासन जिम्मेदार नहीं है क्योंकि केवल शोध–पत्रों की सॉफ्ट–कॉपी को ही स्वीकार किया गया है और पुस्तक में मुद्रित किया गया है।

lEikndh;

प्राचीन समृद्ध एवं गौरवपूर्ण सांस्कृतिक सम्पदा को अपने आँचल में समेटे पवित्र प्रदेश हरियाणा विभिन्नताओं को अपने अन्दर समाहित किए हुए है। इस पवित्र प्रदेश को वैदिक संस्कृति का पालना भी कहा गया है। 1 नवम्बर 1966 को एक अलग भारतीय राज्य के रूप में अस्तित्व में आये हरियाणा प्रदेश का इ तिहास सुदूर अतीत में पौराणिक युग तक उपलब्ध होता है। हरियाणा प्रदेश की भूमि दर्शन और साहित्य की दृष्टि से सदा ही उर्वरा रही है, जिसमें साहित्य सृजन के प्रथम प्रयास को देखा गया है।

इतने सुदीर्घ और समृद्ध इतिहास, दर्शन, चिन्तन और साहित्य की सम्पदा से युक्त हरियाणा की ज्ञान–मंजूसा भले ही काल के क्रूर हाथों बिखर गई हो, परन्तु जो कुछ उपलब्ध है, वह यहां की संस्कृति की वह धरोहर है, जो समृद्धि की ओर संकेत करती हैं। सरस्वती और अन्य आपगाओं के मध्यवर्ती–तटवर्ती भू–भाग ' हरियाणा प्रदेश' को आदि–सृष्टि का उद्‌गम–स्थल माना जाता है और ज्ञान की देवी सरस्वती की तो इस भूमि पर विशेष अनुकम्पा रही है। हमारे लिए हर्ष का विषय यह है कि विश्व के प्राचीनतम उपलब्ध ग्रन्थ 'ऋग्वेद' का प्रणयन हरियाणा राज्य की पवित्र भूमि पर हुआ। कहा जा सकता है कि हरियाणा प्रदेश की भूमि ऋग्वेद–काल से ही आर्य–संस्कृति, वैदिक वाड्मय और ब्राह्मण–साहित्य का ज्ञानपीठ रही है। इसकी समृद्ध और गौरवशाली साहित्यिक परम्परा ऋग्वेद से आरम्भ होकर अन्य वेद–वेदांगों, महाभारत, मारकण्डेय एवं वामन आदि पुराणों, सांख्य–दर्शन, अष्टःध्यायी, नाट्यशास्त्र, मनुस्मृति, कादम्बरी, प्रियदर्शिका, तत्वसंदेश शास्त्र और महापुराण तक चली आयी है। हिन्दी साहित्य–सृजन में हरियाणा प्रदेश ने महत्वपूर्ण भूमिका अदा की है।

हरियाणा प्रदेश का भक्ति साहित्य एवं संत समाज समृद्ध है। इसमें भारतीय संस्कृति का मौलिक रूप दिखाई पड़ता हे। भक्ति साहित्य की दृष्टि से हरियाणा की धरती का अपना विशेष महत्व है। महाभारत धार्मिक महाकाव्य यहीं लिखा और श्रीमद्‌भगवत् गीता का अमर संदेश यहीं से प्रसारित हुआ। चिन्तन और सृजन की इस धरती पर पुष्पदंत, श्रीधर, सूरदास, कुछ अंशों में गोस्वामी तुलसीदास भी, गरीबदास, संतोख सिंह, निश्चल दास, हाली पानीपत, बालमुकुन्द गुप्त, अहमदबख्श थानेसरी, विश्म्भर नाथ शर्मा, लख्मीचंद, जयनाथ 'नलिन', विष्णु प्रभाकर, इन्द्रा स्वप्न, ब्रह्मदत्त वाग्मी, रतन चन्द शर्मा, मदनगोपाल, मोहन चोपड़ा, छविनाथ त्रिपाठी, पुरुषोत्तमदास निर्मल, सुगनचन्द मुकेश, लीलाधर वियोगी, राकेश वत्स और स्वदेश दीपक प्रभूति, ऐसे धुरन्धर साहित्यकार हो चुके हैं, जिनके योगदान के बिना हिन्दी–साहित्येतिहास की परिकल्पना भी नहीं की जा सकती। हरियाणा प्रदेश के संत सूरदास, गरीबदास, निश्चलदास, भाई संतोख सिंह, नित्तानंद, जैतराम, आदि संतों ने अपनी अमृतवाणी से हरियाणा की भूमि को सीचा और लोगों को धर्म–परायणता एवं नैतिकता से जीवन जीने की प्रेरणा दी। अतः हरियाणा प्रदेश

में साहित्य रचना की परंपरा निरंतर चली आ रही है, जिसमें हरियाणा का नाथ साहित्य, जैन काव्य, संत काव्य, सूफी संत साहित्य, निर्गुण संतों की हिन्दी भक्ति साहित्य को देन है।

हरियाणवी हिन्दी काव्य का पारम्भिक रूप यहां के जैन तथा नाथ काव्य में प्राप्त होता है। मध्यकालीन भक्ति काव्य की संत, सूफी, राम एवं कृष्ण काव्य परम्पराओं का अनुसरण करते हुए इस धरती पर हरियाणा से युक्त अनेक काव्य–ग्रन्थों का प्रणमन हुआ। अतः हरियाणवी भक्तिकालीन साहित्य का स्वरुप अत्यन्त व्यापक है। हरियाणवी संतों ने भक्ति–भावना के साथ–साथ तत्कालीन समाज, धर्म व राजनीति के विविध संदर्भों को उठाकर अत्यन्त ओजस्वी वाणी में अपना साहित्य रचा है। अतः हरियाणवी समूचा सन्त साहित्य धार्मिक–सामाजिक चेतना से अनुप्राणित है, हरियाणा का लोक साहित्य, लोक गीत, हरियाणा में रचित प्रबन्ध काव्य, हरियाणा की आधुनिक हिन्दी कविता, हरियाणा की बोलिया, हिन्दी बाल साहित्य, लघुकथा, हरियाणा की पत्र–पत्रिकाएं, उपन्यास, कहानी, नाट्य साहित्य, निबन्ध आदि हरियाणा के हिन्दी साहित्य की शोभा बढ़ा रहे हैं। हरियाणवी साहित्यकारों ने हिन्दी साहित्य इतिहास में अपनी एक महत्त्वपूर्ण भूमिका निभाई है।

ऋग्वेद काल से ही आर्य–संस्कृति, वैदिक वाड्मय और ब्राह्मण साहित्य की ज्ञानपीठ कही जाने वाली हरियाणा की भूमि जिस पर वैदिक काल से प्रवाहित सरस काव्यधारा आज भी हरियाणा की धरती को रस–सिक्त कर रही है, उस हरियाणा प्रान्त का इतिहास एक रूप से उपेक्षित रहा हैं। अर्थात प्रागेतिहासिक काल से लेकर अब तक का इतिहास इस प्रदेश के लिए मूक बना हुआ है। इस संगोष्ठी के माध्यम से हरियाणवी संत कवियों का समाज में योगदान उनकी उपादेयता और उनकी प्रासंगिकता के संदर्भ में उनके महत्त्व को उजागर कर साहित्य की अभिवृद्धि का प्रयास किया गया है।

शुभकामनाएं सहित।

मुख्य सम्पादक
Mk- egUn fl g
सहायक प्राध्यापक, अध्यक्ष
हिन्दी विभाग
बनवारी लाल जिन्दल सूईवाला महाविद्यालय, तोशाम, भिवानी (हरियाणा)

vuØef.kdk

	fo"k;	i"B
1.	हरियाणवी सांगों में भक्ति–भावना *प्रो. राजेन्द्र बड़गुज्जर*	1–6
2.	भक्ति काव्य और हरियाणा की भक्ति परम्परा *डॉ. जय प्रकाश शर्मा*	7–11
3.	हिन्दी भक्ति काव्यधारा में हरियाणा का योगदान *डॉ. रमा कान्ता*	12–20
4.	जन कल्याणकार कबीर *डॉ. सेलवराज*	21–23
5.	ऐतिहासिक संत कवि सूरदास की काव्यगत विशेषताएँ *सजिता जे.*	24–25
6.	भक्तिकालीन साहित्य में सामाजिक व सांस्कृतिक चेतना *डॉ. विपिन गुप्ता*	26–30
7.	सामाजोत्थान में हरियाणवी संत कवियों का योगदान *मनीषा*	31–35
8.	हरियाणवी साहित्य के विकास में पंडित लख्मीचन्द का योगदान *सोनू कुमारी*	36–39
9.	हरियाणवी लोक संगीत में भक्ति *गीता देवी*	40–43
10.	स्वामी विवेकानन्द : एक संत विचारधारा *संदीप कुमार*	44–46
11.	प्रेम का प्रतीक : सूफी साहित्य *डॉ. सुशीला*	47–49

12. संत काव्य में मानवता 50–52
डॉ. नरेश कुमार सिहाग
13. अहमदबख्श थानेसरी कृत रामायण में रामकाव्य और चित्रित राम का स्वरूप 53–60
सुमन, रानी एवं मंजुनाथ एन. अंबिग
14. भक्तिकालीन काव्य और सामाजिक परिवर्तन 61–63
राजकुमार शोधार्थी
15. संस्कृत महाकाव्यों का धर्म और दर्शन 64–67
सुदेश कुमारी
16. संत काव्यधारा एवं सूफी काव्यधारा : एक विवेचनात्मक अध्ययन 68–76
डॉ. प्रवेश लता शर्मा
17. कबीर का ब्रह्म–वृक्ष 77–81
डॉ. मान सिंह
18. भक्तिकाव्य और राष्ट्रवाद 82–85
डॉ. ज्योति सिंह
19. भक्ति काव्यधारा में सामाजिक चेतना के विविध आयाम 86–88
डॉ. नीलम
20. हरियाणवी साहित्य के इतिहास में पंडित लखमीचंद के सांगों का योगदान 89–91
पूनम रानी
21. भक्त काव्यधारा में बाल मनोविज्ञान 92–94
सुमन
22. हरियाणवी संत कवियों का आर्थिक परिप्रेक्ष्य 95–98
डॉ. सुमित्रा कुमारी
23. डॉ. मानसिंह दहिरया 'आन्नद' के भक्ति साहित्य में सामाजिक चेतना के विविधि आयाम 99–103
विधावती

24. संत ब्रह्मनंद सरस्वती का दार्शनिक चिन्तन 104–107
डॉ. मुकेश कुमार
25. हिन्दी भक्ति काव्यधारा में हरियाणवी कवि सूरदास जी का योगदान 108–109
शमशेर सिंह व डॉ. कविता देवी
26. हरियाणवी साहित्य के विकास में पंडित लखमीचन्द का योगदान 110–112
सुभाष, शोधार्थी
27. हरियाणवी लोकसाहित्य में राष्ट्रीय चेतना : ऐतिहासिक परिप्रेक्ष्य में 113–115
अशोक कुमार, शोधार्थी
28. हरियाणवी साहित्य में सांग परम्परा 116–119
श्यामवीर
29. हरियाणवी साहित्य के विकास में पंडित लखमीचंद का योगदान 120–123
पूनम धौंचक
30. संत जैतराम के काव्य में नारी चेतना 124–126
सुनिता, शोधार्थी
31. संस्कृत महाकाव्यों में धर्म का स्वरूप 127–131
डॉ. जोगेन्द्र कुमार
32. वैज्ञानिक युग में धर्म की प्रासंगिकता 132–136
जोगेन्द्र सिंह
33. हरियाणवी साहित्य के विकास में पंडित लखमीचंद का योगदान 137–140
डॉ. सुरेश कुमार
34. भक्तिकाव्य में बाल मनोविज्ञान 141–143
विनोद कुमार
35. हरियाणवी साहित्य के विकास में पंडित लखमीचंद का योगदान 144–145
विनोद कुमार
36. संत जैतराम के काव्य का सामाजिक स्वरूप 146–151
सोमवीर

37. समाज उत्थान में हरियाणवी संत कवियों का योगदान 152–157
प्रीति सहरावत
38. विज्ञान के प्रचार–प्रसार में हिन्दी साहित्य की भूमिका 158–160
डॉ. सुखेन्द्र
39. हरियाणवी संत परम्परा 161–163
सुमन
40. संत कवियों की निर्गुण भक्ति एवं सामाजिक चेतना 164–167
सीमा देवी
41. तुलसीदास की सामाजिक एवं सांस्कृतिक चेतना का प्रभाव 168–171
निर्मला देवी
42. सूफी काव्य की परंपरा और मूल चेतना 172–175
नीरज कुमारी
43. सगुण भक्ति काव्य की अनुभूति एवं विशेषताएँ 176–179
मोनिया दीक्षित
44. तुलसीदास का साहित्य एवं काव्य रचना 180–182
सोनिया
45. भक्ति काव्यधारा में सामाजिक चेतना के विविध आयोग 183–185
पिंकी
46. संस्कृत महाकाव्य मे धर्म एवं दर्शन 186–189
जयपाल
47. भक्तकवयित्री मीराँबाई के पद एवं धार्मिक स्वरुप 190–193
नीलम
48. भक्तिकाल में कृष्णभक्ति शाखा के प्रमुख कवि एवं कृतियाँ 194–198
पुष्पा बाई